

आदित्य-एल.1 मिशन
अवसर की घोषणा (ए.ओ.)
चतुर्थ चक्र

अक्टूबर 2026
विज्ञान कार्यक्रम कार्यालय
इसरो मु., बेंगलूरु

आदित्य-एल1 मिशन

चतुर्थ ए.ओ. चक्र प्रेक्षणों के लिए प्रस्ताव आमंत्रित करने हेतु अवसर की घोषणा (ए.ओ.)

1. आवेदन करने हेतु मानदंड:

आदित्य-एल.1 प्रेक्षणों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित करने वाली यह घोषणा भारत में स्थित संस्थानों/विश्वविद्यालयों/कॉलेजों में कार्य करने वाले एवं भारत में निवास करने वाले भारतीय वैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं के साथ-साथ दुनिया भर की अंतरिक्ष एजेंसियों/संस्थानों/विश्वविद्यालयों/कॉलेजों में कार्य करने वाले ऐसे प्रवासी भारतीयों (एन.आर.आई.) एवं अन्य गैर-भारतीय वैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं हेतु भी खुली है, जो

- सौर विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान में शामिल हैं एवं
- आवश्यक वैज्ञानिक एवं तकनीकी औचित्य के साथ सौर प्रेक्षण हेतु प्रधान अन्वेषक (पी.आई.) के रूप में प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकते हैं एवं
- डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं, यदि अनुमोदनों के आधार पर प्रेक्षण किया जाता है।

2. परिचय एवं समय-सारिणी

आदित्य-एल.1, सूर्य के अध्ययन हेतु भारत का प्रथम समर्पित अंतरिक्ष मिशन, दिनांक 2 सितंबर, 2023 को इसरो के ध्रुवीय उपग्रह प्रमोचनयान (पी.एस.एल.वी. सी-57) द्वारा सफलतापूर्वक प्रमोचित किया गया था। अपने प्रमोचन के बाद, अंतरिक्षयान ने कई कक्षीय सुनियोजित परिचालन किए एवं 6 जनवरी, 2024 को सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के प्रथम लैग्रांज बिंदु (एल.1) के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित हुआ। पृथ्वी से लगभग 1.5 मिलियन किलोमीटर दूर स्थित यह एल.1 बिंदु, ग्रहण या अवरोध से मुक्त, सूर्य के निरंतर एवं निर्बाध प्रेक्षण का अनूठा लाभ प्रदान करता है।

आदित्य-L1 को एल.1 में स्थापित करने से सौर गतिविधि का निरंतर मॉनीटरन संभव हो पाता है एवं पृथ्वी के चुंबकमंडल के प्रभाव से मुक्त, सौर कणों एवं चुंबकीय क्षेत्रों की सटीक माप प्राप्त होती है। इस मिशन में सात वैज्ञानिक नीतभार हैं - चार सुदूर संवेदन हेतु एवं तीन स्वस्थाने मापन हेतु। सुदूर संवेदन उपकरण विद्युत चुम्बकीय विकिरण की विभिन्न तरंग दैर्ध्य का उपयोग करके सूर्य की विभिन्न परतों, जैसे कि प्रकाशमंडल, वर्णमंडल एवं प्रभामंडल का प्रेक्षण करते हैं। स्वस्थाने नीतभार, जिनमें कण संसूचक एवं चुंबकमापी शामिल हैं, एल.1 के आसपास के स्थानीय अंतरिक्ष वातावरण पर डेटा एकत्र करते हैं।

इस मिशन के बारे में विस्तृत जानकारी इसरो की वेबसाइट (https://www.isro.gov.in/Aditya_11.html) पर उपलब्ध है। उपकरणों एवं उनके निष्पादन के बारे में अधिक जानकारी <https://link.springer.com/collections/ebfhcjdjic> पर उपलब्ध है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) विजिबल एमिशन लाइन कोरोनोग्राफ (वी.ई.एल.सी.) एवं सौर अल्ट्रा-वायलेट इमेजिंग टेलीस्कोप (एस.यू.आई.टी.) से प्रेक्षण समय का उपयोग करने हेतु चतुर्थ आदित्य-एल.1 ए.ओ. (अवसर की घोषणा) हेतु प्रस्ताव आमंत्रित करता है। प्रस्तावों को भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान डेटा केंद्र (आई.एस.एस.डी.सी.) में होस्ट किए गए आदित्य-एल.1 प्रस्ताव प्रसंस्करण प्रणाली (ए.एल.पी.पी.एस.) के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। ए.एल.पी.पी.एस. तक आई.एस.एस.डी.सी. की वेबसाइट (<https://www.issdc.gov.in/>) या सीधे लिंक <https://alpps.issdc.gov.in/web>. के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। वैज्ञानिक योग्यता एवं तकनीकी व्यवहार्यता हेतु सभी प्रविष्टियों की आदित्य-एल.1 समय आबंटन समिति (ए.एल.टी.ए.सी.) द्वारा समीक्षा की जाएगी।

इस चतुर्थ ए.ओ. चक्र हेतु अनुमोदित प्रेक्षण जनवरी 2027 एवं मार्च 2027 के बीच आयोजित किए जाएंगे। विशिष्ट तिथियों एवं समय-सारणी के संबंध में अद्यतन सूचना आई.एस.एस.डी.सी. वेबसाइट पर पोस्ट की जाएगी।

प्रस्ताव से संबंधित सभी मामलों हेतु, प्रस्ताव के प्रधान अन्वेषक (पी.आई.) इसरो हेतु एकल संपर्क बिंदु हैं। प्रस्तावित प्रस्तावों की स्थिति के बारे में पी.आई. को ई-मेल के माध्यम से सूचित किया जाएगा। यह अपेक्षा की जाती है कि ए.ओ. परियोजना पूरी करने हेतु आवश्यक सुविधाएं संबंधित मेजबान संस्थानों द्वारा प्रदान की जाएंगी। अनुरोध किए गए प्रेक्षण पूरा होने पर पी.आई. को सूचित किया जाएगा। चतुर्थ ए.ओ. चक्र के लिए आदित्य-एल.1 डेटा हेतु कोई स्वामित्व अवधि नहीं होगी। डेटा तैयार होते ही आई.एस.एस.डी.सी. के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र में जारी किया जाएगा। टारगेट ऑफ ऑपच्युनिटी (टू.ओ.ओ.) प्रेक्षण के अंतर्गत अधिग्रहीत सभी डेटा को सार्वजनिक रूप से, आमतौर पर आई.एस.एस.डी.सी. के माध्यम से अधिग्रहण के 24-48 घंटों के भीतर, भी जारी किया जाएगा।

चतुर्थ ए.ओ. चक्र हेतु प्रस्तावों को प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 20 नवंबर, 2026 है। सटीक तिथियों एवं प्रस्ताव प्रस्तुत करने से संबंधित सभी घोषणाएं आई.एस.एस.डी.सी. की वेबसाइट (<https://www.issdc.gov.in/>) पर उपलब्ध होंगी।

3. चक्रों का प्रेक्षण

इस चतुर्थ ए.ओ. चक्र में, भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय ए.ओ. प्रस्तावों हेतु प्रेक्षण समय उपलब्ध है। मिशन की आवश्यकताओं के आधार पर, जनवरी 2027-मार्च 2027 की प्रेक्षण अवधि के भीतर अंशांकन एवं अन्य रखरखाव गतिविधियों हेतु प्रेक्षण निर्धारित किया जाएगा। टारगेट ऑफ ऑपच्युनिटी (टू.ओ.ओ.) प्रस्ताव कभी भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

3.1 ए.ओ. चक्र

आदित्य-एल.1 का प्रचालन पूर्व-नियोजित तरीके से किया जाता है अर्थात् अपने प्रेक्षण के निष्पादन के दौरान प्रस्तावक मिशन प्रचालन परिसर में उपस्थित नहीं होते हैं। इस प्रकार, सभी प्रेक्षणों को पहले से ही पूर्ण विवरण के साथ निर्दिष्ट किया जाना चाहिए।

- प्रेक्षण विंडो जनवरी 2027 से मार्च 2027 तक है एवं इसे चतुर्थ ए.ओ. चक्र के रूप में जाना जाता है। यदि वैज्ञानिक औचित्य एवं तकनीकी व्यवहार्यता के आधार पर उपयुक्त पाए जाने के बाद अनुमोदित किया जाता है, तो इस ए.ओ. चक्र के दौरान केवल वी.ई.एल.सी. एवं एस.यू.आई.टी. आधारित प्रस्तावों को समीक्षा एवं संबंधित शेड्यूलिंग के लिए स्वीकार किया जाएगा।
- प्रेक्षण समय भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रस्तावक के लिए प्रधान अन्वेषक (पी.आई.) के रूप में आदित्य-एल.1 के समय का उपयोग करने के लिए है। वे व्यापक रूप से रुचि लेने वाले शोधार्थी, वैज्ञानिक एवं सौर खगोल विज्ञान समुदाय के हो सकते हैं, जो सौर एवं सौरमंडलीय खगोल विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान में शामिल हों तथा आवश्यक वैज्ञानिक एवं तकनीकी औचित्य के साथ विशिष्ट लक्षित प्रेक्षणों के लिए प्रधान अन्वेषक (पी.आई.) के रूप में प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए सुसज्जित हो, अनुमोदन के आधार पर लक्ष्य का प्रेक्षण किया गया हो तो डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं।
- चयनित ए.ओ. प्रस्तावों को इस चतुर्थ ए.ओ. प्रेक्षण कार्यक्रम में निर्धारित करने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएँगे। हालाँकि, इस ए.ओ. चक्र में अनुमोदित कुछ प्रेक्षणों को प्रचालन की आवश्यकता के आधार पर उपर्युक्त अवधि के बाहर निर्धारित किया जा सकता है, जो आदित्य-एल.1 मिशन द्वारा प्रदान किया जाएगा।

4. प्रस्ताव की तैयारी, सत्यापन, प्रस्तुति एवं चयन का समग्र अवलोकन

प्रस्तावों के पी.आई. को आदित्य-एल.1 प्रस्ताव प्रसंस्करण प्रणाली (ए.एल.पी.पी.एस.) सॉफ्टवेयर का उपयोग करके 20 नवंबर, 2026 की समय-सीमा तक इसरो को प्रस्ताव प्रस्तुत करना होगा। ए.एल.पी.पी.एस.: <https://alpps.issdc.gov.in> के माध्यम से ऑनलाइन उपलब्ध है। ए.एल.पी.पी.एस. एक वेब एप्लीकेशन है एवं डाउनलोड करने योग्य नहीं है तथा इसे ऑफ-लाइन उपयोग नहीं किया जा सकता है। प्रस्तावक की मार्गदर्शिका ए.एल.पी.पी.एस. लैंडिंग पेज पर उपलब्ध है जो प्रस्ताव प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का वर्णन करती है। इस खंड में सारांश दिया गया है।

4.1 प्रस्ताव तैयार करने के लिए संक्षिप्त निर्देश (आदित्य-एल.1: वी.ई.एल.सी. एवं एस.यू.आई.टी.)

प्रस्तावों को बनाने, तैयार करने एवं प्रस्तुत करने के लिए प्रस्तावक को ए.एल.पी.पी.एस. का उपयोग करना है। आई.एस.एस.डी.सी. वेबपेज पर ऑनलाइन उपलब्ध वी.ई.एल.सी. एवं एस.यू.आई.टी. प्रस्तावक मार्गदर्शिका, प्रस्ताव के लिए उपलब्ध नीतभार विशेषताओं एवं उपकरण विन्यास के विवरण का वर्णन करते हैं। निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दिया जाना है:

1. प्रस्ताव तैयार करने से पहले, वैज्ञानिक उद्देश्यों एवं प्रेक्षित किए जाने वाले सौर क्षेत्रों या विशेषताओं (उदाहरण के लिए, कोरोना, सक्रिय क्षेत्र, यू.वी. संरचनाएँ) को स्पष्ट रूप से चिह्नित करें। सुनिश्चित करें कि अनुरोध किए गए संबंधित प्रयोक्ता मार्गदर्शिका में वर्णन किए अनुसार वी.ई.एल.सी. एवं एस.यू.आई.टी. के प्रेक्षण मोड एवं प्रचालनात्मक सीमाओं का संज्ञान लेते हुए पूरा किया जा सकता है।
2. चूँकि आदित्य-एल.1 लगातार एल.1 बिंदु से सूर्य का प्रेक्षण करता है, इसलिए लक्ष्य दृश्यता की जाँच की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, यदि विज्ञान मामले में समय-विशिष्ट प्रेक्षण की आवश्यकता होती है (उदाहरण के लिए, एक सक्रिय क्षेत्र का विकास या फ्लेयर-संबद्ध

अध्ययन), तो प्रस्तावक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस तरह की समय-सीमा वैज्ञानिक रूप से उचित है एवं ए.ओ. प्रेक्षण विंडो के दौरान प्रचालनात्मक रूप से संभव है।

3. वी.ई.एल.सी. एवं एस.यू.आई.टी. प्रस्तावक मार्गदर्शिका में दिए गए विनिर्देशों के आधार पर आवश्यक एक्सपोजर समय, कैडेंस एवं अन्य उपकरण प्राचलों का अनुमान लगाएँ। तकनीकी व्यवहार्यता प्रदर्शित करने के लिए जहां भी उपयुक्त हो, अनुकारी, फोटॉन फ्लक्स अनुमान या विकिरण मॉडल का उपयोग किया जा सकता है।
4. आई.एस.एस.डी.सी. वेबसाइट पर उपलब्ध लेटेक्स टेम्पलेट का उपयोग करके वैज्ञानिक औचित्य तैयार करें। प्रस्तावों का मूल्यांकन अपेक्षित विज्ञान रिटर्न, प्रेक्षण रणनीति की उपयुक्तता, एक्सपोजर/कैडेंस सेटिंग्स के औचित्य एवं समग्र तकनीकी एवं वैज्ञानिक व्यवहार्यता के आधार पर किया जाएगा। व्यवहार्यता अनुकरण, एस.एन.आर. अनुमान एवं लागू होने वाली संबंधित गणनाओं के माध्यम से स्थापित की जानी चाहिए।
5. ए.एल.पी.पी.एस. में लॉग इन करें एवं एक प्रस्ताव तैयार करें। आवश्यकतानुसार प्रस्ताव श्रेणी; नियमित या अवसर के लक्ष्य का चयन करें। नियमित प्रकार के लिए ए.ओ. चक्र का चयन करें।
6. अनिवार्य क्षेत्र, जैसे प्रस्ताव शीर्षक, सार एवं जाँचकर्ताओं की सूची भरें। सुनिश्चित करें कि प्रधान अन्वेषक (पी.आई.) का विवरण सटीक है, क्योंकि पी.आई. इसरो के लिए संपर्क का एकल बिंदु होगा।
7. "उपकरण संरूपण" पृष्ठ में, आवश्यकतानुसार वी.ई.एल.सी. एवं/या एस.यू.आई.टी. का चयन करें एवं प्रचालनात्मक मोड, फिल्टर, एक्सपोजर समय, कैडेंस एवं प्रस्तावित प्रेक्षण के लिए आवश्यक किसी भी अन्य सेटिंग्स को निर्दिष्ट करें।
8. "प्रेक्षण समय सेटिंग्स" पृष्ठ में, सभी प्रासंगिक ओवरहेड्स सहित प्रेक्षण के लिए आवश्यक कुल अवधि प्रदान करें। प्रस्तावक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अनुरोध की गई अवधि वैज्ञानिक औचित्य में बताए गए एक्सपोजर अनुमानों एवं प्रेक्षण संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप है। समय अवधि को ठीक करने के लिए बाधा जाँच हल का उपयोग करें।
9. वैज्ञानिक औचित्य एवं सिमुलेशन, प्लॉट या गणना आउटपुट जैसी सहायक सामग्री की पी.डी.एफ. फाइलें अपलोड करें।
10. "सत्यापित एवं प्रस्तुत करें" पृष्ठ पर उपकरण सेटिंग्स एवं प्रेक्षण समय आवश्यकताएँ सहित सभी प्रविष्टियों की जाँच करें। "वैध करें" पर क्लिक करें एवं यदि आवश्यक हो तो सुधार करें। सफल सत्यापन होने पर, प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

4.2 ए.एल.पी.पी.एस. निर्देश

प्रस्ताव तैयार करने के लिए ए.एल.पी.पी.एस. के भीतर विभिन्न प्रविष्टियों को भरने के निर्देश ऑनलाइन उपलब्ध हैं। इस उद्देश्य के लिए ए.एल.पी.पी.एस. प्रस्तावक मार्गदर्शिका का भी संदर्भ लिया जा सकता है, जो आई.एस.एस.डी.सी. वेबसाइट पर उपलब्ध है। ए.एल.पी.पी.एस. पर प्रस्ताव तैयार कर प्रस्तुत करने संबंधी पूछताछ के लिए (issdc@istrac.gov.in) पर मेल किया जा सकता है। प्रश्नों का उत्तर सर्वोत्तम प्रयास के आधार पर दिया जाएगा।

4.3 आदित्य-एल1 प्रस्ताव की तैयारी

पहली बार प्रस्तावकों को प्रस्ताव तैयार करने से पहले एएलपीपीएस में पंजीकरण करना होगा। प्रस्ताव प्रस्तुत करने से पहले प्रस्तावक एएलपीपीएस उपयोगकर्ता दिग्दर्शिका देख सकते हैं।

4.4 एएलपीपीएस में प्रस्ताव प्रबंधन

प्रत्येक आने वाले प्रस्ताव की पावती स्वतः ही भेजी जाएगी। प्रस्तुतिकरण की अंतिम तिथि पर, प्रस्तावों को वैज्ञानिक समीक्षा के लिए एएलटीएसी को भेजा जाएगा। एएलटीएसी का गठन अध्यक्ष, इसरो/सचिव, अं.वि. द्वारा किया जाता है।

एएलटीएसी प्रत्येक प्रस्ताव को प्राथमिकताएँ सौपेगा। एएलटीएसी कुछ प्रस्तावकों से किसी प्रस्ताव में प्रेक्षण समय को कम करने या अन्य संशोधनों का सुझाव देने के लिए कह सकता है। इस तरह के प्रस्ताव संशोधन के लिए पीआई को उपलब्ध कराए जाएंगे। प्रस्तावक केवल एएलटीएसी द्वारा अनुशंसित परिवर्तनों के लिए निर्धारित समय सीमा से पहले एक संशोधित प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकेंगे। यदि समय सीमा से पहले ऐसे प्रस्तावों को संशोधित नहीं किया जाता है, तो उन्हें सफल प्रस्तावों की सूची से बाहर कर दिया जाएगा।

प्रेक्षण करने की तकनीकी व्यवहार्यता भी एएलटीएसी द्वारा संचालित की जाएगी। एक विशेष दिन के दौरान कौन से प्रेक्षण किए जाएंगे, इसकी योजना बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले मापदंडों में से एक, एएलटीएसी द्वारा आबंटित प्रेक्षणों की प्राथमिकता है।

हालाँकि, प्रचालनात्मक कारणों से, इस बात की कोई गारंटी नहीं दी जा सकती है कि एक विशेष प्रेक्षण वास्तव में निष्पादित किया जाएगा, भले ही उसकी प्राथमिकता कुछ भी हो।

5. डेटा प्रसाधन, डेटा अधिकार और प्रकाशन

प्रेक्षण पूरा होने के बाद, प्राप्त प्रारंभिक डेटा को स्तर-1 और आदित्य-एल 1 के नीतभार प्रचालन केंद्र (पीओसी) द्वारा स्तर 2 डेटा में परिवर्तित किया जाता है। वीईएलसी और एसयूआईटी-पीओसी भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (आईआईए), बंगलूरु और खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी अंतर-विश्वविद्यालय केंद्र (आईयूसीएए), पुणे में स्थित हैं। उच्च-स्तरीय डेटा आईएसएसडीसी को भेजा जाता है। आईएसएसडीसी नीतभार डेटा के अंतर्ग्रहण, त्वरित प्रेक्षण प्रदर्शन (क्यूएलडी), अभिलेखीय (सभी स्तर सहायक डेटा के साथ) और प्रसार के संचालन के लिए उत्तरदायी है। आदित्य-एल 1 नीतभार डेटा मानक सीडीएफ और फिट्स प्रारूप में होगा।

आईएसएसडीसी से संसाधित स्तर-1 और/या स्तर-2 डेटा डाउनलोड करने के लिए सफल प्रेक्षण पूरा होने के बाद पीआई को सूचित किया जाएगा।

स्तर-1 से स्तर-2 तक का मानक पाइपलाइन सॉफ्टवेयर और कोई भी अन्य उच्च स्तरीय मानक उत्पाद आईएसएसडीसी वेबसाइट के माध्यम से प्रस्तावों के पीआई को उपलब्ध कराए जाएंगे।

5.1 स्वामित्व अवधि

चतुर्थ एओ चक्र के दौरान नीतभार (या नीतभार) से प्राप्त प्रेक्षण डेटा के लिए कोई स्वामित्व अवधि लागू नहीं होगी, जिसके लिए प्रेक्षण प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाते हैं (वीईएलसी, एसयूआईटी, या दोनों, प्रस्ताव के

आधार पर)। डेटा को उत्पादन के तुरंत बाद आईएसएसडीसी के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध कराया जाएगा, जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुलभ होगा।

चूंकि कोई स्वामित्व अवधि नहीं है, इसलिए डेटा का उपयोग किसी भी व्यक्ति या टीम द्वारा किया जा सकता है, जिसमें पीआई और टीम के अलावा वे लोग भी शामिल हैं, जिन्होंने प्रेक्षण के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं।

अवसर (टीओओ) लक्ष्य प्रेक्षणों को तुरंत स्तर-1 डेटा में संसाधित किया जाएगा और इसे आईएसएसडीसी अभिलेखागार में रखा जाएगा। डेटा गैर-स्वामित्व वाला है और प्रेक्षण के तुरंत बाद जनता के लिए खुला है।

5.2 प्रकाशन और स्वीकृति/आभार

आदित्य-एल 1 डेटा का उपयोग करने वाले सभी प्रकाशनों को सार में विश्लेषण/व्याख्या के लिए उपयोग किए जाने वाले नीतभार (रों) के नाम के साथ एक वाक्यांश "आदित्य-एल 1" को शामिल करके डेटा उपयोग को स्वीकार करना चाहिए।

आदित्य-एल 1 डेटा का उपयोग करके पेपर प्रकाशित करते समय, पेपर के लेखक (लेखकों) द्वारा निम्नलिखित स्वीकृति/आभार शामिल की जानी चाहिए:

"यह प्रकाशन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के आदित्य-एल 1 मिशन के डेटा का उपयोग करता है, जो भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान डेटा केंद्र (आईएसएसडीसी) में संग्रहित है"।

यदि किसी उपयोगकर्ता ने पहले से प्रकाशित आदित्य-एल 1 परिणामों का उपयोग किया है और आगे की व्याख्या या मॉडलिंग की है, तो स्वीकृति/आभार में निम्नलिखित कथन शामिल किया जाना चाहिए।

"अनुसंधान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के आदित्य-एल 1 मिशन से प्राप्त परिणामों पर आधारित है (आंशिक रूप से या काफी हद तक), जो भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान डेटा केंद्र (आईएसएसडीसी) में संग्रहित है"।

इसरो आदित्य-एल 1 के डेटा से प्राप्त किसी भी/सभी परिणामों का उपयोग कर सकता है और उपयोगकर्ता द्वारा इसे अपने उपयोग के लिए, अपनी रिपोर्ट और प्रकाशनों में ऐसी पत्रिकाओं और प्रकाशनों के संदर्भ/स्वीकृति के साथ पत्रिकाओं या किसी अन्य प्रकाशन में शैक्षणिक पेपर्स के माध्यम से प्रकाशित किया जा सकता है।